

"(ऐ नबी!) वे आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है तथा लोगों के लिए कुछ लाभ हैं, और इन दोनों का पाप इनके लाभ से बड़ा है। तथा वे आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ खर्च करें। (उनसे) कह दीजिए जो आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।" [193] [सूरा अल-बक्रा : 219]

पूँजीवाद ने मनुष्य के लिए एक स्वतंत्र पद्धति तैयार किया है, और वह उसी के अनुसार चलने का आह्वान करता है। पूँजीवाद का यह दावा है कि यह उदार पद्धति है, जो इंसान को विशुद्ध सुख की ओर ले जाएगा। लेकिन मनुष्य अंततः खुद को एक वर्गों में बटे हुए समाज में गोता लगाता हुआ पाता है, जहाँ या तो दूसरों पर अत्याचार पर आधारित बहुत ज्यादा मालदारी होती है या नैतिक रूप से प्रतिबद्ध लोगों के लिए घोर गरीबी होती है।

साम्यवाद आया और सभी वर्गों को निरस्त कर दिया तथा अधिक टोस सिद्धांत बनाने की कोशिश की, लेकिन इसने ऐसे समाजों का निर्माण किया, जो दूसरों की तुलना में अधिक गरीब, अधिक दुखी और अधिक उपद्रवी हैं।

मगर इस्लाम ने संतुलन को सुनिश्चित किया। मुस्लिम समुदाय एक संतुलित समुदाय है। इसने मानवता को एक महान व्यवस्था प्रदान की, जिसकी गवाही खुद इस्लाम के दुश्मनों ने भी दी है। फिर भी कुछ मुसलमान इस्लाम के महान मूल्यों का पालन करने में विफल हैं।

📞 03:53:42

🌐 <https://www.alnajat.org/79/>

📧 info@alnajat.org

📅 2026 03:53:42